|  |  |  |
| --- | --- | --- |
| 03. Mai | | |
| **Fest der heiligen Apostel Philippus und Jakobus** | | |
| Lesung.: 1 Kor 15,1-8; Evangelium.: Joh 14, 6-14 | | |
|  |  |  |
|  |  |  |
| Eröffnung: | GL 546, 1-4 | Christus, du Licht vom wahren Licht |
|  | GL 542, 1+4+6 | Ihr Freunde Gottes |
|  |  |  |
| Kyrie: | GL 130 | Herr, erbarme dich |
|  |  |  |
| Gloria: | GL 131 | Ehre sei Gott in der Höhe |
|  |  |  |
| Antwortgesang: | Ps 19,2-5b |  |
|  | Kehrvers: 35, 1 | Ein Tag sagt es jubelnd |
|  | Psalmlied: GL 381, 1+2 | Dein Lob, Herr |
|  |  |  |
| Halleluja: | GL 174, 3 |  |
|  | Vers: |  |
|  | *So spricht der Herr:* |  |
|  | *Ich bin der Weg, die Wahrheit und das Leben.* | |
|  | *Philippus, wer mich gesehen hat, hat den Vater gesehen.* | |
|  |  |  |
| Gabenbereitung: | GL 281, 1+3!+4 | Also sprach beim Abendmahle |
|  | GL 484, 1+3-5 | Dank sei dir, Vater |
|  | GL 477, 1+2 | Gott ruft sein Volk zusammen |
|  |  |  |
| Sanctus: | GL 132 | Heilig |
|  |  |  |
| Agnus Dei: | GL 133 | Lamm Gottes |
|  |  |  |
| Danksagung: | GL 484, 1+2+5+6 | Dank sei dir, Vater |
|  | GL 328, 1+2+5+6 | Gelobt sei Gott |
|  | GL 272, 1+2 | Zeige uns, Herr, deine Allmacht |
|  |  |  |
| Schluss: | GL 380, 1+4 | Großer Gott |